UP Board Notes Class 7 Hindi Chapter 1 जागो जीवन के प्रभात (मंजरी)

समस्त पद्यांशों की व्याख्या

अब जागो ..... के प्रभात!
शब्दार्थ:
प्रभात = सवेरा,
वसुधा = पृथ्वी,
हिम-कन = बर्फ के कण,
ओस, क्षोभ = दुख,
अरुणागात = लालिमायुक्त शरीर वाली।

संदर्भ:
प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'मंजरी' के 'जागो जीवन के प्रभात' नामक कविता से लिया गया है। इसके कवि जयशंकर प्रसाद हैं।

प्रसंग:
कवि ने प्रभात के माध्यम से जीवन में नई आशा का संचार करने के लिए और जागरण के लिए सन्देश दिया है।

व्याख्या:
कवि नवजीवन के प्रभात में जागने का आवाहन करता है। इस प्रात:काल (प्रभात) में ओस और बर्फ रूपी दुख के जो कारण दिखाई देते थे, वे समाप्त हो गए हैं। लालिमायुक्त शरीर वाली उषा प्रकट हो चुकी है। अतः प्रभात में जाग उठो, इस नवजीवन में सक्रिय हो जाओ।

तम-नयनों..... के प्रभात!
शब्दार्थ:
तम-नयनों = अन्धकार रूपी नेत्रों,
ताराएँ = आँखों की पुतलियाँ,
किरण-दल = किरणों का समूह,
मलय-वात = शीतल, मन्द एवं सुगन्धित हवा।

संदर्भ:
पूर्ववत्।

प्रसंग:
कवि ने रात्रि बीत जाने पर नवजीवन के प्रभात का वर्णन किया है।

व्याख्या:
रात्रि के तारे, आँखों को अन्धकार विलुप्त होकर प्रकाश की किरणों के समूह में मुँद गए हैं और प्रातः की शीतल, मन्द और सुगन्ध वाली मलय समीर चल रही है। इस प्रभात बेला में जाग उठो और नवजीवन में सक्रिय हो जाओ।

https://www.evidyarthi.in/

रजनी की ..... के प्रभात।
शब्दार्थ:
रजनी = रात,
कलरव = पक्षियों का चहचहाना,
अरुणांचल = पूर्व दिशा,
चल रही बात = चर्चा हो रही है।

संदर्भ: पूर्ववत्।

प्रसंग:
कवि ने प्रात:काल में पक्षियों के चहकने और शीतल वायु के चलने और नवजीवन के प्रभात का वर्णन किया है।

व्याख्या:
प्रभात होने से रात्रिकालीन साज-सज्जा (अन्धकार) की कालावधि बीत गई है। प्रातः पक्षियों का जो मधुर कलरव (गान) हो रहा है, उससे उठकर (जागकर) मिलो, उसका अभिनन्दन करो। पूर्व दिशा से जागृति की हवा चलने लगी है। अतः इस प्रात:काल की बेला में जाग जाओ। नवजीवन में सक्रिय हो जाओ।

https://www.evidyarthi.in/